आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2393 • उदयपुर, मंगलवार 13 जुलाई, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

सेवा–जगत्
मन से सेवा, नारायण सेवा

संस्थान द्वारा बड़ौदा में निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर

नारायण सेवा संस्थान द्वारा स्वामी विवेकानंद स्कूल जी.आई.डी.सी. के सामने बड़ौदा में निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर का आयोजन 04 जुलाई 2021 को किया गया। शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान देवजी भाई पटेल (उद्योगपति, समाजसेवी, बड़ौदा), अध्यक्ष श्रीमती वंदना जी अग्रवाल (निदेशक, नारायण सेवा संस्थान), विशिष्ट अतिथि सुश्री पलक जी, श्रीमान् जीवन भाई जी पटेल, श्रीमान् हंसमुख भाई जी, श्रीमान् गुलशन कुमार जी, श्रीमान् जीवनलाल जी आदि गणमान्य उपस्थित थे। संस्थान निदेशक ने बताया कि संस्थान 36 वर्षों से निःस्वार्थ सेवा कर रहा है।

संस्थान ने कोरोना काल दौरान जरूरतमंदों के लिए गरीब परिवारों तक राशन पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है, देशभर की संस्थान शाखाओं में शिविर लगाकर निःशुल्क राशन वितरण किया जा रहा है। सुश्री पलक जी ने बताया कि इस वर्ष कोरोना काल में संस्थान ने घर–घर भोजन सेवा, ऑक्सीजन सिलेंडर, एम्बुलेंस सेवा, कोरोना किट, निःशुल्क हाइड्रोलिक बेड भी उपलब्ध करवाने का संकल्प लिया। इस दौरान हजारों कोरोना संक्रमित को निःशुल्क सेवा उपलब्ध करवायी गई। संयोजक जितेश जी व्यास ने बताया कि दिव्यांगों को 21 कृत्रिम अंग व 19 कैलीपर्स वितरण किये गये। शिविर में हरिप्रसाद जी, लोगर जी डांगी, श्री भंवर सिंह जी, श्री सुशील कुमार जी, श्री मुन्ना जी, श्री फतेहलाल जी, श्री मानसिंह जी आदि ने सहयोग किया।

संस्थान द्वारा आगरा में 32 राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान द्वारा असहाय, दिव्यांग, मूक बधिर, एवंम दूसरी लहर कोरोना महामारी के चलते बेरोजगार हुए गरीब कामगारों को बल्केश्वर मंदिर परिसर, आगरा में निःशुल्क राशन का वितरण 04 जुलाई 2021 को किया गया।

संस्थान द्वारा भारतवर्ष में 50000 परिवारों को राशन निःशुल्क दिया जा रहा है। आगरा शिविर के अंतर्गत 32 गरीब परिवारों को निःशुल्क राशन दिया गया।

शिविर प्रभारी मुकेश जी शर्मा ने बताया मुख्य अतिथि श्रीमान् हरिओम जी गोयल एवं श्रीमान विमल जी गुप्ता, श्रीमान् महेश जी जौहरी, श्रीमान् नरेन्द्र जी (थाना प्रभारी, कमलानगर), श्री राजकुमार जी गोयल, श्री लोकेश जी गोस्वामी, श्रीमान् अभिषेक जी गोस्वामी, श्रीमान् योगेश जी गोस्वामी, आदि गणमान्य मेहमान उपस्थित थे। शिविर प्रभारी ने बताया कि संस्थान 36 वर्षो से निःस्वार्थ सेवा कर रहा है। इस वर्ष कोरोना काल में संस्थान घर–घर भोजन सेवा, ऑक्सीजन सिलेंडर, एम्बुलेंस सेवा, कोरोना किट, निःशुल्क हाइड्रोलिक बेड भी उपलब्ध करवाने का संकल्प लिया इस दौरान हजारों कोरोना संक्रमितों को निःशुल्क सेवा उपलब्ध करवायी जा रही है।

संस्थान ने ऐसे जरूरतमंदों के लिए नारायण गरीब परिवारों तक राशन पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसी क्रम में उदयपुर शहर के विभिन्न आदिवासी क्षेत्र में शिविर लगाकर निःशुल्क राशन वितरण किया जा रहा है। प्रत्येक किट में 15 किलो आटा, 5 किलो चावल, 4 किलो दाल, 2 किलो तेल, 2किलो शक्कर, 1 किलो नमक एवं आवश्यक मसाले दिए गए। पूरी टीम ने चयनित परिवारों को राशन वितरण में सहयोग प्रदान किया।

नारायण सेवा ने राशन और राहत के संग बांधा त्रिपाल

नारायण सेवा संस्थान ने वल्लभनगर तहसील के बाठेरड़ा खुर्द में उन दो अनाथ बच्चों तक मदद पहुंचाई, जो पिछले कुछ समय से अभाव और तनाव की जिन्दगी जी रहे हैं। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि बाठेरड़ा खर्द के भाट समाज के दो बच्चों यमुना (11) व गणेश (8) के पिता का निधन हो चुका है, जबकि मां इन्हें भाग्य के भरोसे छोड़ नाते चली गई। ये अनाथ बच्चे बिन रोटी और पढ़ाई के जैसे–तैसे जीवन काट रहे हैं।

संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने बच्चों के घर पहुंचकर पर्याप्त मात्रा में राशन, कपड़े व पोषाहार प्रदान किया। केलूपोश घर की छत के वर्षा में टपकने की आशंका के चलते बड़ा त्रिपाल भी डलवाया। उल्लेखनीय है पिता के मरने और मां के नाते जाने के बाद इनका पालन–पोषण कर रही दादी की भी गत दिनों मौत हो गई थी। बच्चों को उनके शिक्षण में भी मदद के लिए आश्वस्त किया गया।

चेगलपट्टु (तमिलनाडु) में राशन–सेवा

नारायण सेवा संस्थान यों तो दिव्यांगता मुक्ति अभियान में प्रमुख रूप से सेवारत है किंतु कोरोना काल में जरूरतमंदों के लिये विविध प्रकार की सेवा में अग्रणी रहा है। आप सभी के आशीर्वाद से देशभर के करीब 50 हजार परिवारों को राशन–सामग्री प्रदान करने का सौभाग्य पाया है।

यह प्रक्रिया अनवरत जारी है। ऐसा ही एक राशन वितरण शिविर नारायण गरीब परिवार राशन–योजना के अंतर्गत तमिलनाडु प्रांत के चेगलपट्टु नगर में 30 जून 2021 को आयोजित किया गया।

नारायण सेवा संस्थान की इस शाखा द्वारा कुल 104 परिवारों को राशन–किट प्रदान किये गयें। शिविर प्रभारी लालसिंह जी भाटी के अनुसार इस कार्यक्रम में जो अतिथिगण पधारे उनके शुभनाम निम्नलिखित हैं– श्री शिवकुमार जी (बी.डी.ओ., मदुरंतकम ब्लोक), श्री मुरली जी (सब इंस्पेक्टर पुलिस पडालम), श्री जी. एस. सुरेश बाबू (शासकीय वकील), श्री मारी मूथा (सेवानिवृत वी. ए. ओ.) श्री सत्य सांई, श्री एजीलरासु (सामाजिक कार्यकर्ता), श्री एम. जी. अंबाजगन (निदेशक–जी. वी. एस.) श्री वेंकटेश जी एस. (कोषाध्यक्ष–जी. वी. एस.)। शिविर के लाभार्थी जन अत्यंत प्रसन्न थे।

आशियाना फिर बसा

मदद को तरसती पत्नी और मासूमों को नारायण सेवा ने संभाला

उदयपुर जिले के आदिवासी बहुल जोर जी का खेडा निवासी मीना (बदला हुआ नाम) का पति अहमदाबाद में नमकीन की दुकान पर काम करता था। कोरोना की दूसरी लहर में खराब तबीयत के चलते वो गांव आया और दो दिन बाद मृत्यु हो गई। एक तरफ पत्नी पति की मौत से दुःखी थी तो दूसरी तरफ तीन बेटियों और वृद्ध सासु मां की चिंता भी उसे सता रही थी।

असमय मौत से असहाय परिवार के घर में न आटा था न दाल और न ही पैसा भोजन को मोहताज परिवार पर ताउते तूफान का कहर भी ऐसा बरपा की टूटी– फूटी छत भी उड़ गई। परिवार के पांचों जन ने बारिश में रातें गुजारी तो बाद में तेज धूप में तपने को मजबूर हो गए।

नारायण सेवा संस्थान ने ली सुध

संस्थान की आदिवासी क्षेत्रों में राशन बांटने वाली टीम को पता चला तो वे वहां पहुंचे। दुःखी परिवार को ढ़ाढस बंधाते हुए मदद के लिये हाथ बढ़ाया।

हर माह मिलेगा राशन

मृतक मजदूर परिवार को संस्थान ने मौके पर ही महीने भर का आटा, चावल, तेल, शक्कर, चाय, दाल, और मसाले दिए। हर माह इस परिवार को राशन दिया जाता रहेगा।

संस्थान बनाएगा पक्की छत –

घर की छत का निर्माण भी संस्थान द्वारा करवा लिया गया। जब बरसात के दिनों में उसे तकलीफ नहीं होगी।

गरीब परिवार तक पहुंची नारायण सेवा

उदयपुर जिले के झाड़ोल उपखंड की ग्राम पंचायत माणस के खाड़किया फला के रहने वाले उस गरीब परिवार तक बुधवार को नारायण सेवा संस्थान राहत सामग्री लेकर पहुंचा, जो पिछले कई दिनों से बेबसी की जिन्दगी जी रहा था। संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि इस गांव का आदिवासी भरत मजदूरी और बकरी पालन करके अपने परिवार का जीवनयापन कर रहा था।

भरत पर अपने परिवार के साथ दो भाइयों के बच्चों की जिम्मेदारी भी थी। इसके दो बड़े भाई–हिम्मत और करण बीमारी के चलते 4 वर्ष पूर्व मौत के शिकार हुए और उनकी पत्नियां भी बच्चों को छोड़कर अन्यत्र नाते चली गई, इस तरह भरत बड़े भाई हिम्मत की 3 संतानों और करण के दो बच्चों सहित अपने 3 बच्चों, बूढ़ी मां और बहन कुल 11 सदस्यों के परिवार का भारी बोझ ढो रहा था।

लॉकडाउन के चलते इस परिवार पर तब मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा जब भरत की मजदूरी हाथ से निकल गई और परिवार पर मुफलिसी के बादल गहरा गए।

संस्थान को पता लगने पर निदेशक वंदना अग्रवाल के नेतृत्व में मौके पर टीम पहुंचकर परिवार को फिलहाल एक माह का राशन, सम्पूर्ण परिवार के लिए वस्त्रादि और बच्चों के लिए पोषाहार तथा आगे भी मदद का भरोसा दिया। सहायता टीम में मांगीलाल जी, दिलीप जी चौहान, शंभुनाथ जी शामिल थे।

कोरोना से बेहाल, भूख से परेशान

मेरा नाम प्रेम है। मैं किराणें की दुकान पर 8000 रुपये की नौकरी करता हूँ। घर में 2 बच्चे और पत्नी है। कुछ दिन पहले मुझे बुखार आया।

दूसरे दिन बच्चे को सर्दी–जुकाम हुआ और तीसरे दिन पत्नी को बुखार आ गया। खाने का स्वाद भी जाता रहा। हम सब घर वाले टेस्ट करवाने गए।

दूसरे दिन हम सब की कोरोना रिपोर्ट पॉजिटीव आ गई। हम सभी घर में होम आइसोलेट हो गए। हॉस्पिटल से दवाई आ गई।

घर आई भोजन थाली–

अब हमारे सामने समस्या यह थी कि खाना कौन बनाए? तभी पता चला कि पडोस में नारायण सेवा की गाड़ी रोज फ्री खाना दे जाती है। हमने भी संस्थान से 4 थाली भोजन का आग्रह किया। अच्छी सी पैकिंग में स्वादिष्ट भोजन हमारे घर भी शुरु हो गया।

14 दिन तक रोज भोजन आया हमारे घर। दवाई और भोजन की बदौलत हम सभी परिजन ठीक है। मैं संस्थान का जितना साधुवाद करूं कम है।

कोरोना ने जकड़ा, पीड़ित की मदद के लिए आगे आया संस्थान

मेरा नाम मोहन है। मेरे घर में पत्नी और एक बच्चा है। गली–गली जाकर सब्जी बेचता हूँ। 200–200 रुपये रोज कमाता हूँ। एक दिन शाम को मुझे हल्की सी थकान लगी। घर जा गया। खाना खाकर जल्दी ही सो गया।

मुझे रात में बुखार आ गया दूसरे दिन सर्दी–जुकाम भी हो गया। दो दिन बाद मैंने हॉस्पिटल में जांच करवाई रिपोर्ट कोरोना पॉजिटीव आई। हॉस्पीटल से दवा तो लाया पर खत्म हो गई, हालत अब भी खराब थी। अब घरवालों ने कहा जाओ दवाई लेकर आओ। दवाई कहां से लाता? मेरे पास रुपये नहीं थे और हालत घर से बाहर निकलने जैसी भी नहीं थी। तभी पडोसी ने नारायण सेवा संस्थान के बारे में बताया और मैंने फोन किया तो संस्थान ने मुझे कोरोना दवाई किट दिया।

14 दिन तक मुझे भोजन भी भिजवाया। मैं अब पूरी तरह से स्वस्थ हूँ। मैं संस्थान का धन्यवाद करता हूँ।

सम्पादकीय

प्रगति एक सतत् प्रक्रिया है। प्रगतिशील व्यक्ति ही समय के साथ सामंजस्य बैठा सकता है। यों प्रगति का अर्थ वर्तमान में संकुचित होकर केवल आर्थिक क्षेत्र का मूल्यांकन ही होता जा रहा है। वस्तुतः प्रगति तो सर्वांगीणहै। प्रगति चहुँमुखी हो तभी वह संतुलित कहलाती है। आज आर्थिक प्रगति पर तो सबका पूरा–पूरा ध्यान रहता है किन्तु जो प्रगति मानव का मूल्य स्थापित करती है उस तरफ भी ध्यान अपेक्षित होता है।

प्रगति को वैचारिकता, मानवीयता तथा पावनता से भी जोड़ा जाना आवश्यक है। मूल्यांकन के समय इन क्षेत्रों को भी जोड़ना होगा तभी सर्वांगीण प्रगति होगी। आज वैश्विक स्वास्थ्य संकट है तो इन कसौटियों की प्रासंगिकता भी बढ़ गई है। विश्व में कोई भी देश मानवीय सुरक्षा के उपाय खोजे तो उसे सबके लिये उपयोगी बनाने की भी पहल हो। यो मानव में परहित भाव जन्मजात होता है किन्तु परिस्थिति के कारण वह क्षीण हो सकता है। मानव सेवा का भाव पुनः पूर्ण रूप से उदित हो यह भी प्रगति का एक प्रकार ही है। यों सभी इस दिशा में प्रयासरत हैं पर समवेत प्रयास से ही प्रगति दृष्टिगत होगी।

कुछ काव्यमय

मैं मेरा मेरे लिये
यह है घातक सोच।
इसमें कहां समानता,
यह प्रगति में पोच।।
मैं सबका मेरे सभी,
यही है सोच उदार।
तभी संतुलित बन सके,
प्रगतिशील सुविचार।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

मीठी वाणी और सद्व्यवहार

जावेद मियाँ के पड़ोसी जाहिद भाई शहद बेचकर अमीर हो गए। एक दिन जावेद मियाँ अपनी बीवी से बोले... मैं भी कल से साइकिल के पंक्चर निकालने का काम छोड़.. शहद बेचूंगा।

बीवी ने समझाया.... शहद का धंधा बाद में करना.... पहले जरा सा शहद सा मीठा बोलना तो सीख लो। बीवी की बात को अनसुना कर जावेद लम्बी तान कर सो गए। दूसरे दिन सवेरे उठे और शहद के थोक व्यापारी से शहद का कनस्तर उधार लेकर ..... शहद लो शहद.... पुकारते कस्बे के गली मोहल्ले में घूमते रहे .....मगर उनकी कर्कश आवाज के कारण किसी ने उनकी तरफ देखा भी तो मुँह मोड़ लिया.....।

शाम को हारे थके ज्यों–का –त्यों कनस्तर उठाए वे घर पहुँचे और मुँह लटका कर बैठ गए। बीवी ने उन्हें फिर समझाया कि जो खुशमिजाज और मीठा बोलते हैं, उनकी तीखी मिर्च भी हाथों–हाथ बिक जाती है..... जबकि कर्कश बोलने वालों से लोग 'शहद' भी खरीदना पसन्द नहीं करते।

इस प्रतीकात्मक कहानी का सार यही है कि यदि हम विनम्र हैं तो हमारे साथ दूसरों का व्यवहार भी नम्र होगा। नम्रता वाणी से झलकती है। मीठी वाणी बोलने वाले की इन्सान से तो क्या.... ईश्वर से भी निकटता बढ़ जाती है। लाठी और पत्थर की चोट से भी ज्यादा घातक होती है' अपशब्द' अथवा अहंकार युक्त वाणी की चोट। बरसों पुराने सम्बन्ध भी यह झटके से तोड़ देती है.....।

सज्जनता की परीक्षा पहले वाणी फिर व्यवहार से होती है.....आपका दृष्टिकोण सकारात्मक होगा तो वाणी में कर्कशता और 'मूड' में उखड़ापन आ ही नहीं सकता। मीठी वाणी और सद्व्यवहार का फल भी सदैव मीठा होता है। यह व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला भी है।

–कैलाश 'मानव'

संगत का असर

किसी शहर में एक सेठ रहता था। आप और हम जानते हैं। संगत का कितना असर होता हैं। संगत का असर समझने के लिए ये छोटा सा प्रसंग समझना जरूरी है। सेठ का एक बेटा था। बेटे की दोस्ती कुछ ऐसे लड़कों के साथ थी। जिनकी आदत बहुत खराब थी। सेठ को ये सब अच्छा नहीं लगता था। सेठ ने अपने बेटे को समझाने की बहुत कोशिश की पर सेठ कामयाब नहीं हुए। जब भी सेठ उसको समझाने की कोशिश करते, बेटा कह देता मैं उनकी गलत आदतों को नहीं अपनाता। इस बात से दुःखी होकर सेठ ने अपने बेटे को सबक सिखाना चाहा। एक कोई उदाहरण देना चाहा। उसके हृदय में उतर जाये और वो बुरी संगत छोड़ दे।

सेठजी बाहर से कुछ सेब खरीद कर लेकर आये। उन्होनें एक साथ सेब को रखे। सेब में एक सड़ा हुआ सेब भी लेकर आये। ला कर सेठ ने अपने लड़के को सेब दिए। कहा इनको अलमारी में रख दो। इन सबको हम कल खायेंगे। जब बेटा सेब देखने लगा तो एक सेब सड़ा हुआ देखकर सेठ से बोला ये सेब तो सड़ा हुआ हैं। सेठ ने बोला कोई बात नहीं कल खायेंगे, कल देखेंगे। अभी तुम रख दो।

दूसरे दिन सेठ ने अपने बेटे से सेब निकालने को कहा। उसके बेटे ने जब सेब निकाली, तो आधे से ज्यादा सेब सड़े हुए थे। सेठ के लड़के ने कहा इस एक सेब ने तो बाकी सेबों को सड़ा दिया है। तब सेठ ने कहा ये सब संगत का असर है।

बेटा इसी तरह गलत संगत से अच्छा आदमी भी खराब हो जाता है, गलत काम करने लगता है। गलत संगत को छोड़ दो बेटा, बेटे के समझ में बात आ गयी। और उसने वादा किया कि अब वो गलत संगत में नहीं जायेगा। हमेशा अच्छी संगत में ही रहेगा। आप सबको और हम सबको ध्यान देना चाहिए।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश के मन में जिज्ञासा तो उस लड़के का हाल चाल जानने की थी जिसके हाथ पांव काटने की बात हो रही थी मगर यहां इस स्त्री का रुदन देख वह सब भूल गया। डाक्टर खत्री ने उसे देखते ही कहा–कैलाश जी इस स्त्री को समझाओ, रात को आप गये उसके बाद यह आई और तब से ही रो– रो कर पूरा अस्पताल सिर पर उठा लिया। इधर तो मैं उस लड़के का ऑपरेशन कर रहा था और इधर इसका चीखना चिल्लाना। पूरी रात सभी मरीज परेशान हो गये।

डा. के मुँह से लड़के का जिक्र सुनते ही कैलाश को यहां आने का अपना मूल कारण याद आ गया और वह पूछ बैठा– वह लड़का कैसा है, ऑपरेशन ठीक हो गया? डॉ. ने बताया कि ऑपरेशन बहुत बड़ा था मगर अच्छा हो गया। लड़का होश में आ गया है और सो रहा है। दोनों के बीच यह बातचीत चल रही थी तभी उस स्त्री का चिल्लाना फिर बढ़ गया। डाक्टर ने कैलाश को कहा कि इसे समझा दो कि चुप रहे वरना इसके पति की बिना इलाज ही छूट्टी कर देंगे। यह कह कर डाक्टर आगे बढ़ गये। कैलाश उस स्त्री के पास गया और सांत्वना देने लगा, मगर वह बजाय चुप होने के और जोर से रोने लगी, विलाप करने लगी–मेरा क्या होगा, मैं कहां जाऊंगी।

कैलाश के कुछ समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। उसके मन में उस लड़के को देखने की भी उत्कण्ठा थी मगर डाक्टर साहब उसे इस स्त्री का जिम्मा दे गये थे, तभी कैलाश को एक युक्ति सूझी। उसने स्त्री को कहा–माताजी, आप मेरे साथ आईये, मैं एक चीज आपको बताता हूं।

कैलाश का प्रस्ताव सुन स्त्री चुप हो गई, उसे शायद समझ में नही आ रहा था कि ये मुझे कहां ले जाना चाहते हैं, कैलाश ने फिर उससे कहा– उठो, चलो मेरे साथ। स्त्री किंकर्तव्यविमूढ सी उठ कर कैलाश के साथ चल पड़ी मगर कुछ कदम चलने के बाद षायद उसे याद आया तो वह वापस रोने लगी।

अंश - 59

घिसट घिसट कर संस्थान में आया लौटते वक्त अपने पैरों पर खड़ा था

सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) जिले के गांव भाबसी निवासी श्री धर्मवीर सिंह के पुत्र अर्पित जन्म से ही एक पांव में घुटनों से नीचे तक दिव्यांग था। गरीबी के कारण न उसका इलाज हो सका और न ही उसे पढ़ने के से भेजा जा सका। माता– पिता बच्चे की इस हालत और उसके भविष्य को लेकर सदैव चिंतित रहते। घर का माहौल हर समय उदासी से भरा रहता था।

धर्मवीर बताते हैं एक दिन उन्हें किसी परिचित में नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांगों की निःशुल्क चिकित्सा, कृत्रिम अंक लगाने और सहायक उपकरण दिये जाने की जानकारी दी। उसके बाद वे बेटे को लेकर उदयपुर आए और संस्थान के डॉक्टर से मिले जिन्होंने दिलासा देते हुए कहा कि आप बेटे को गोद में उठा कर लाए है किंतु वह अपने पांव पर खड़ा होकर चलते हुए अपने घर में प्रवेश करेगा। कुछ दिनों के इलाज के बाद उसे विशेष कैलीपर पहनाया गया। अर्पित जब पिता के साथ पुनः अपने घर के लिए रवाना हुआ तब यह संस्थान के अस्पताल से चलते हुए ही बाहर निकला। पिता ने कहा मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। अब इसके लिए मैं वो सब– कुछ करूंगा जिसका सपना देखा करता था।

संस्थान द्वारा दिव्यांग दम्पती व बच्चे की मदद

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांग धर्माराम (13) और रमेश मीणा (28) को उनकी विपरीत परिस्थितियों में तात्कालिक मदद पहुँचाई है। कानोड़ तहसील जिला उदयपुर (राज.) के तालाब फला निवासी रमेश पुत्र वाला मीणा का घर आग लगने से स्वाह हो गया था। संस्थान ने अनाज, वस्त्र, कम्बल मसाले आदि देकर उसकी मदद की। रमेश और उसकी पत्नी लोगरी दोनों ही जन्मजात दिव्यांग है। चार बच्चों के साथ गृहस्थी को चलाना, पहले से ही इसके लिए भारी था और अब घर के जल जाने से उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है। वहीं मंगलवार को पीआरओ विपुल शर्मा को फुटपाथ पर मिले धर्मा पुत्र कंवरलाल को व्हीलचेयर, कपड़े, बिस्किट एवं राशन देने के साथ उसका सीपी टेस्ट करवाया। इस बालक की दो वर्ष पूर्व बीमारी के दौरान आवाज और आंखों की रोशनी चली गई थी। अब इसके पांव भी नाकाम हो गए है। डॉक्टर्स टीम आवश्यक चिकित्सा के लिए प्रयासरत हैं।

संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने कहा कि विषमता में परेशान दिव्यांगों एवं दुखियों को ज्यादा से ज्यादा मदद पहुंचाने के लिए संस्थान तत्पर है। इस अवसर पर विष्णु जी शर्मा हितैषी, भगवान प्रसाद जी गौड़, दिलीप सिंह जी, फतेहलाल जी मौजूद रहे।

हर जन्मजात हृदयरोग में सर्जरी की जरूरत नहीं पड़ती

कई कारणों से बच्चों में जन्मजात वि.तियां होती है। इनमें से एक है जन्मजात हृदय विकार। 6 माह तक पसीना आना, शरीर नीला पड़ने विशेषकर नाखून व होंठ, बार–बार निमोनिया व वजन कम बढ़ना जैसे लक्षण दिखे तो तत्काल डॉक्टर को दिखाएं। नई तकनीकों के जरिए हृदय विकार को ठीक कर बच्चे स्वस्थ हो जाते हैं।

देरी से भी दिखते लक्षण

जन्मजात विकार बच्चों में होने वाले विकारों में सबसे सामान्य है, जो 100 में से 1 बच्चे को होता है। इसलिए जरूरी नहीं कि यह विकार बच्चों को ही प्रभावित करता है। कुछ बच्चों में बड़े होने पर रोग का पता चलता है। दिल में छेद होना जन्मजात हृदय विकार का एक प्रकार है। वॉल्व मे ब्लॉकेज, रक्त वाहिकाओं का असामान्य तरीके से जुड़े रहना, वॉल्व में सिकुड़न, हृदय चैम्बर का अविकसित होना आदि भी जन्मजात विकार हैं। घबराएं नहीं इलाज करवाएं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

जब हम भगवान का कोई काम करते हैं, तब ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियाँ उपहार देती हैं, सारी शक्तियाँ। अनन्त रूपों से उपहार देती हैं, दे रही हैं। पानरवा में मफतकाका साहब ने बहुत वनवासी क्षेत्र, आदिवासी क्षेत्र में सेवा कार्य करवायें। देखा झोपड़ों में जाकर–भूख से हाल विकल।

सेवा का लिया संकल्प
आँखों में भर आया जल।।
बड़ी–बड़ी गांठा गाबा री,
बांध–बांध ने लावे रे।
नवा धुलाकर लाड प्यार सूं,
नान्या ने पेरावे रे।
बड़ा–बड़ा वे केई डॉक्टर,
सेवाभावी आवे रे।।
तन–मन–धन सूं सेवा कर ने,
कतराई रोग मिटावे रे।

कैलाश के जीवन के चित्र। अकेला कैलाश क्या कर सकता है? यदि राधेश्याम भाईसाहब ने आशीर्वाद नहीं दिया होता तो कैलाश हार जाता, थक जाता। आशीर्वाद श्रीमती सोहनी देवी जी का, भायाजी श्रीमान् देवीलाल जी अग्रवाल का, मफत काका साहब, काकी साहिबा, महान चित्र, महान घटनाएं, महान अनुभव।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 186 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति
(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें
मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999
आपके अपने संस्थान का पता
नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023